Date - 04/02/2025
Time - 10. AM

डॉ मनोज कुमार सिंह
मनोविज्ञान विभाग
महाराजा कॉलेज आरा

P.G - 2nd Semester
Paper - CC - 7
Psychopathology

Topic :-

असामान्य व्यवहार की विशेषताएं एवं अंतर
(Characteristics and differences of abnormal behavior

असामान्यता की गंभीरता तथा प्रकार का निर्धारण करने के लिए असामान्य व्यवहारों की पहचान करना निहायत ही जरूरी होता है, हालाँकि असामान्य व्यवहार सामाजिक मानक (Social norm) एवं प्रत्याशाओं(Expectations) के प्रतिकूल होने के साथ ही साथ अपअनुकूलित (Maladaptative) भी होता है। लेकिन मात्र यही विशेषताएँ असामान्यता के स्वरूप को पूर्णतः स्पष्ट करने के लिए प्रर्याप्त नहीं है। असामान्य व्यवहार के स्वरूप (Nature) को पूर्णतः समझने के लिए मनोवैज्ञानिकों ने इसकी कई विशषताओं पर डाला है। ऐसी ही कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नांकित है।

1**. समाज-विरोधी व्यवहार (Antisocial Behaviour)-**असामान्य व्यवहार सामान्य रूप से स्वीकृत नियमों, सामाजिक मानकों (social norm) एवं मूल्यों (values) का विरोधी होता है। अर्थात् जब कोई व्यवहार इस ढंग का होता है कि उससे समाज के नियमों, मूल्यों तथा मानकों (norms) का अतिक्रमण होता है तो उसे असामान्य व्यवहार की श्रेणी से रखा जाता है। उदाहरणार्थ चोरी करना, हत्या, बलात्कार आदि कुछ ऐसे ही व्यवहार है जिससे सामाजिक मानक एवं मूल्यों का अतिक्रमण होता है। स्पष्टतः तब कहा जा सकता है कि असामान्य व्यवहार की एक प्रमुख विशेषता समाजविरोधी होना होता है।

2. **मानसिक असंतुलन (Mental Imbalance)-**मानसिक असंतुलन भी असामान्यता का एक प्रमुख सूचकों में से एक है। ऐसे व्यक्तियों के व्यवहारों तथा विचारों में काफी अस्थिरता तथा असंगतता पायी जाती है। अर्थात वे अभी कुछ सोचते है तथा कुछ समय के बाद ठीक उसके विपरित सोचने लगते हैं और वे जब विपरित सोचते है तो ठीक पहले से उल्टा वे करना भी प्रारम्भ कर देते हैं।

3. अपर्याप्त समायोजन **(Poor Adjustment**) अपर्याप्त समायोजन भी असामान्य व्यवहार का एक प्रमुख लक्षण है। ऐसे व्यक्ति जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में घटिया समायोजन क्षमता का प्रदर्शन करते हैं। घटिया समायोजन क्षमता के कारण इन्हें परिवार तथा समाज से काफी तिरस्कार मिलता है। परिणामतः उनकी समस्या बढ़ती ही जाती है।

4. **सूझपूर्ण व्यवहार की कमी (Lack of insightful behaviour)-**असामान्य व्यक्तियों में सूझ की कमी का होना एक सामान्य लक्षण है। इसके कारण असामान्य व्यक्ति सही-गलत, अच्छा-बुरा, तथा नैतिक-अनैतिक में

अन्तर करनें असमर्थ रहते हैं। इन्हें जिम्मेवारियों का भी एहसास नहीं होता। इस सबका परिणाम यह होता है कि ऐसे व्यक्ति बिना किसी दोष-भाव एवं पश्चाताप के विभिन्न तरह के समाजविरोधी व्यवहार करते जाते है।

5. विघटित व्यक्तित्व **(Disorganized Personality**)-विघटित व्यक्तित्व भी असामान्य व्यवहार का एक प्रमुख लक्षण है। विघटित व्यक्तित्व से तात्पर्य संज्ञानात्मक (cognitive), क्रियात्मक (motor) एवं भावनात्मक (affective) पक्षों में ताल मेल के अभाव से होता है। सचमुच में इनका व्यक्तित्व इतना अधिक भिन्न-भिन्न होता है कि उनके व्यवहारों में किसी तरह की संगतता (consistency) नहीं रह जाती बल्कि उनका व्यवहार इतनां अविवेकी (irrational) तथा असंतुलित (unbalanced) हो जाता है उससे लोगों के लिए सही अर्थ निकालना संभव नहीं रह जाता है।

6. आत्मज्ञान तथा आत्म-सम्मान की कमी **(Lack of self knowledge and self-esteem)**-आत्म-ज्ञान से तात्पर्य अपने आप को तथा अपने दायित्वों को समझने से होता है। असामान्य व्यक्तियों अपने द्वारा किए जाने वाले व्यवहारों के कारणों एवं उसके परिणामों से अनभिज्ञ होते है। कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसे व्यक्ति अपने योग्यताओं, क्षमताओं तथा अपनी जिम्मेवारियों को नहीं जानते हैं और ना ही मूल्यांकन कर पाते है। इसके अलावे असामान्य व्यक्तियों में आत्म सम्मान (Self esteem) की भी कमी देखने को मिलती है ऐसे व्यक्ति अपने आप को अनादर एवं हीनता के भाव से देखते है और विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में वे अपने आप को अपअनुकूलित (Maladapted) पाते हैं।

7. असुरक्षा की भावना **(Feeling of insecurity)-** असामान्य व्यक्ति अपने आप को काफी असुरिक्षत महसूस करते हैं। प्रायः ऐसे व्यक्ति अपने आप को समाज का एक स्वीकृत हिस्सा (accepted part) नहीं मानते है। इनमें शक इतनी जबरदस्त होती है कि सभी लोगों को शक की निगाह से ही देखते हैं और कभी भी अपने आप को सामाजिक परिस्थिति में खुलकर उपस्थित नहीं कर पाते। ऐसे व्यक्ति प्रायः डरे सहमें जीवन गुजारते हैं।

8. संवेगात्तम अपरिपक्वता **(Emotional Immaturity)**-असामान्य व्यक्तियों के व्यवहार से इस बात की स्पष्ट झलक मिलती है कि इनको सांवेगिक परिपक्वता का अभाव है। सांवेगिक परिपक्वता से तात्पर्य संवेगोंपर नियंत्रण रखने तथा परिस्थिति के अनुकूल संवेगों की अभिव्यक्ति करने से होता है। अकारण हँसना, अकारण ही रो देना इनकी आदत सी होती है। इन सबका संयुक्त परिणाम यह होता है कि सांवेंगिक समायोजन (emotional adjustment) में उन्हें भयंकर समस्या का सामना पड़ता है।

9. सामाजिक अनुकूलन की क्षमता का अभाव **(Lack of social adaptability)**-सामाजिक कुसमायोजन भी असामान्य व्यक्तियों का एक प्रमुख लक्षण है। ऐसे लोग अपने परिवार, समाज, सहकर्मियों के साथ संतोषजनक सम्बंध बनाकर रखने में असमर्थ होते हैं। चूँकि इनमें सांवेगिक स्थिरता (emotional stability) का अभाव होता है परिणामतः इनकी मानसिक अवस्थाओं से हमेशा परिवर्तन होते रहता है। अतः उनका सामाजिक सम्बंध दोषपूर्ण हो जाता है।

10. तनाव एवं अतिसंवेदनशीलता **(Tension and Hypersensitivity**)-असामान्य व्यक्तियों का व्यवहार तनावपूर्ण एवं संवेदनशील भी होता है। ऐसे व्यक्तियों को अपने संवेग एवं भाव पर कोई नियंत्रण नहीं होता है जिससे प्रायः इनमें मानसिक तनाव की स्थिति बनी रहती है। इन सबका संयुक्त परिणाम यह होता है कि इनमें ध्यान-अन्यमनस्यकता, (Distraction of attention) की स्थिति उत्पन्न रहती है। और वे किसी कार्य पर अपने ध्यान को केन्द्रित नहीं कर पाते हैं। ऐसे व्यक्ति किसी साधारण सी घटना से भी इतना अधिक उत्तेजित हो. जाते है कि वे हमेशा बेचैन दिखलाई पड़ते है और उनके व्यवहार में नियमितता (regularity) तथा प्रासंगिता (relevance) समाप्त हो जाता है।

11. पश्चाताप का अभाव **(Lack of Remorse)**-चूंकि असामान्य व्यक्तियों में सूझ का अभाव होता है अतः वे किसी भी तरह के अनैतिक कार्यों को बिना किसी पश्चाताप या दोष-भाव के करते जाते हैं। अर्थात् अपने द्वारा किए गये भूल एवं गलतियों से अनभिज्ञ रहते हैं। यहाँ तक कि ऐसे कार्यों के लिए दण्ड पाने के बावजूद इन्हें अपनी गलती का एहसास नहीं होता है।

इस तरह यह स्पष्ट होता है कि असामान्य व्यक्तियों द्वारा किया गया व्यवहार जिसे असामान्य व्यवहार कह। जाता है कि अपनी कुछ अलग ही विशेषताएँ होती है जिसके आधार पर असमान्यता की गंभीरता तथा उसके प्रकार का निर्धारण करने में काफी मदद मिलती है।

सामान्य व्यवहार तथा असामान्य व्यवहार में अंतर ***(Differences between Normal and Abnormal Behaviour):***

मानव द्वारा किए गये सभी व्यवहारों को मूल रूप से दो भागों में बाँटा जा सकता है-सामान्य व्यवहार (Normal behaviour) तथा असामान्य व्यवहार (Abnormal behaviour)। वैसे तो असामान्य व्यवहार का स्वरूप ही अपने आप में कुछ इस तरह का होता है कि यह सामान्य व्यवहार से स्पष्ट रूप से भिन्न दीख पड़ता है। इसके बावजूद असामान्यता का वैज्ञानिक अध्ययन करने के लिए मनोवैज्ञानिकों ने इसके बीच गुणात्मक (qualitative) तथा मात्रात्मक (quantitative) दृष्टिकोण से अन्तर करने का प्रयास किया है। हालाँकि प्रारम्भ में मनोवैज्ञानिकों के एक समूह का मानना था कि इन दोनों के बीच केवल मात्रात्मक (qantitiative) अन्तर ही पाया जाता है जबकि दूसरे समूह का कहना था कि इनके बीच केवल गुणात्मक (qualitative) अन्तर पाया जाता है। लेकिन आधुनिक मनोवैज्ञानिकों के अनुसार सामान्य तथा असामान्य व्यवहार के बीच मात्रात्मक तथा गुणात्मक दोनों ही अन्तर होता है। गुणात्मक अन्तर (qualitative difference) से तात्पर्य वैसे गुणों की मात्रा (degree) से होता है जो असामान्य व्यवहार में दिखलाई देता है परंतु सामान्य व्यवहार में नहीं दिखलाई देता है। दूसरे तरफ मात्रात्मक अंतर (quantitative difference) से तात्पर्य वैसे गुणों की मात्रा से होता है जो दोनों तरह के व्यवहारों में दिखलाई तो देता है परन्तु कम या ज्यादा की मात्रा में। सामान्य तथा असामान्य व्यवहार में वास्तव में अधिकतर अन्तर मात्रात्मक (quantitative) ही होता है। सामान्य व्यवहार एवं असामान्य व्यवहार के बीच कुछ प्रमुख अन्तर निम्नांकित हैं-

1. सूझपूर्ण व्यवहार **(Insightful Behaviour**)-सूझपूर्ण व्यवहार को सामान्य तथा असामान्य के बीच अन्तर करने की प्रमुख मापदण्ड (criteria) के रूप में पहचान किया गया हे। सामान्य व्यवहार हमेशा सूझपूर्ण(insightful) होता है। एक सामान्य व्यक्ति को इस बात का स्पष्ट ज्ञान होता है कि वह क्या कर रहा है. कैसे कर रहा है, इस व्यवहार के क्या परिणाम होंगे किस परिस्थिति में किस तरह का व्यवहार करना चाहिए तथा किस परिस्थिति में किस तरह का व्यवहार नहीं करना चाहिए आदि-आदि। ऐसे व्यक्तियों को अच्छा-बुरा, सही-गलत तथा नैतिक-अनैतिक का भी स्पष्ट रूप से बोध होता है। जबकि दूसरे तरफ असामान्य व्यवहार में इन गुणों का सर्वथा अभाव देखा जाता है। सच्चाई यह है कि असामान्य व्यक्तियों में नैतिक-अनैतिक, सही-गलत आदि में अन्तर करने की समझ-बूझ न के बराबर रहती। ऐसे व्यक्ति प्रत्येक कार्य को जिसे वह करता है, सही ही समझता है चाहे वह व्यवहार कितना ही गलत या अनैतिक क्यों न हो। स्पष्टतः तब कहा जा सकता है कि असामान्य व्यक्तियों में अनिर्णयकता (indecision) की स्थिति रहती है जबकि सामान्य व्यक्ति का व्यवहार निर्णयात्मक (decisive) एवं ठोस (firm) होता है।

2. संतुलित सामाजिक समायोजन **(Balanced Social Adjustment**)-सामान्य व्यक्तियों का व्यवहार ही कुछ इस तरह का होता है कि उनका सामाजिक समायोजन काफी संतुलित (balanced) होता है। ऐसे व्यक्तियों का परिवार में सदस्यों के साथ, पास-पड़ोस के साथ तथा अपने सहयोगियों (colleagues) के साथ सामाजिक सम्बंध काफी सौहार्द्रपूर्ण होता है। ऐसे व्यक्ति समाज के नियमों एवं मानकों का आदर करते हैं और उसी के अनुकूल व्यवहार करके सौहार्द्रपूर्ण सामाजिक सम्बंध बनाए रखने की कोशिश करते है। इनके विरित असामान्य व्यक्ति

सामाजिक रीति-रिवाजों की अवहेलना करते हुए व्यवहार करता है। सच्चाई यह है कि ऐसे व्यक्तियों की अपनी एक अलग ही दुनिया होती है जो वास्तविक सामाजिक वातावरण से काफी भिन्न होता है। ऐसे व्यक्तियों का सामाजिक समायोजन (social adjustment) खराब होता है तथा उनके व्यवहार में सामाजिक कुसमायोजन (social maladjustment) अपनी चरम सीमा पर होती है। इनमें सहयोग की भावना तथा मिल जुलकर काम करने की प्रवृत्ति का सर्वथा अभाव भी पाया जाता है।

3. सांवेगिक परिपक्वता एवं नियंत्रण **(Emotional Maturity and Control)**-सामान्यता एवं असामान्यता के बीच एक अन्तर सांवेगिक परिपक्वता के आधार पर भी की गयी है। सामान्य व्यक्तियों का सांवेगिक व्यवहार (emotional behaviour) संतुलित एवं नियंत्रित होता है। अर्थात ऐसे व्यक्तियों को अपने संवेग की अभिव्यक्ति एवं उसके स्तर पर पूर्ण नियंत्रण है। वह परिस्थिति की माँग के अनुसार ही विभिन्न तरह के संवेगो जैसे क्रोध, प्रेम, डर, भय खुशी, दुख आदि की अभिव्यक्ति करता है। ठीक इसके विपरित असामान्य व्यक्तियों के सांवेगिक व्यवहार में अस्थिरता तथा अपरिपक्वता (immaturity) दिखलाई पड़ता है। ऐसे व्यक्तियों को न तो अपने संवेग पर नियंत्रण ही रहता है और ना ही वे परिस्थिति के अनुकूल संवेगों की अभिव्यक्ति (expression) ही कर पाते हैं। अकारण खुश हो जाना या आकरण ही दुखी हो जाना असामान्यता का एक प्रमुख लक्षण माना गयी है। अतः कहा जा सकता है कि सांवेगिक अभिव्यक्ति में स्थिरता का होना सामान्यता का सूचक है तथा अस्थिरता (instability) का होना असामान्यता का सूचक है।

4. वास्तविकता का ज्ञान **(Knowledge of Reality)**-सामान्य व्यक्ति हमेशा अपने व्यवहार एवं क्रियाओं को सामाजिक मानकों (Social norms) की वास्तविकता के अनुकूल बनाए रखता है। उन्हें काल्पनिक सच्चाई एकदम पसंद नहीं होती है। परिणामतः इनके व्यवहार में भ्रम (illusion), विभ्रम (hallucination) एवं व्यामोह (delusion) आदि का अभाव देखा जाता है। दूसरी तरफ असामान्य व्यक्तियों का व्यवहार काल्पनिकता एवं अवास्तविकताओं से ओत-प्रोत होता है। चूँकि असामान्य व्यक्तियों की अपनी एक अलग काल्पनिक एवं अवास्तविक दुनिया होती है, अतः वे वास्तविक सामाजिक आदर्श, मानक तथा उसकी हकीकतों से अनजान रहते है। इसका परिणाम यह होता है कि उनका व्यवहार भ्रम (Illusion), विभ्रम (Hallucination), व्यामोह (Delusion) तथा संभ्रांति (Confusion) आदि से पूरी तरह ग्रसित होता है।

5. विचित्र एवं उटपटांग व्यवहार **(Strange and bizzare behaviour)**-सामान्य व्यक्तियों का व्यवहार न तो विचित्र ही होता है और ना ही उटपटांग होता है। ऐसे व्यक्तियों के सोचने एवं व्यवहार करने के ढंग में एक संगतता (Consistency) एवं एकरूपता देखने को मिलता है। इतना ही नहीं, इनके व्यवहारों में नियमितता (Regularity) एवं यथार्थता (Relevancy) भी पायी जाती है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि सामान्य व्यवहार पूर्णतः विवेकी (Rational), तार्किक (Logical) एवं प्रासंगिक होता है। ठीक इसके विपरीत असामान्य व्यवहार बेतुका एवं उटपटांग (bizzare) होता है। सच्चाई यह है कि असामान्य व्यवहार विना सिर-पैर का होता है एवं असमन्वित होता है। इन व्यवहारों से यह स्पष्ट रूप से झलकता है कि वे सामाजिक मान्यताओं के विपरीत हैं एवं असंगत (Inconsistent) हैं। असामान्य व्यक्तियों का व्यवहार आत्म-विरोधी (Self-Contradictory) भी होता है एवं इनमें दोष-भाव या पश्चाताप का अभाव भी पाया जाता है।

6. अपनी देखभाल **(Self Care)**-सामान्य व्यक्ति अपनी देखभाल एवं सुरक्षा (Security) करने में पूर्णतः सक्षम होते हैं। ऐसे व्यक्तियों का व्यवहार इस ढंग से होता है जिससे न तो उनके अहं (Ego) को न तो चोट पहुँचती है और ना ही. उनका मानसिक स्वास्थ्य (Mental Health) पर बुरा प्रभाव पड़ता है। वे ऐसा कोई भी व्यवहार नहीं करते हैं जिससे उनका अस्तित्व (Existence) खतरे में पड़ जाए। इसके विपरित असामान्य व्यक्तियों के व्यवहार में उतनी कुशलता नहीं होती है कि वे अपना देख-भाल एवं सुरक्षा स्वयं कर सके। ऐसी स्थिति में उनकी सुरक्षा एवं दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति का दायित्व परिवार या समाज के लोगों पर चला जाता है। इस तरह असामान्य व्यक्तियों का जीवन परिवार या समाज पर एक बोझ सा बनकर रह जाता है।

7 दोष भाव का अभाव **(Lack of guilt feeling)**-वैसे तो सामान्य व्यक्ति का व्यवहार नैतिक एवं सामाजिक मानकों के अनुकूल होता है लेकिन यदि किसी कारणवश वे कभी अनैतिक, घृणित या असामाजिक व्यवहार कर डालते है तो उनसे गंभीर दोष-भाव या पश्चाताप का अनुभव होता है और वे भविष्य में इस तरह के व्यवहार नहीं करने की कसम खाते हैं। कहने का मतलब यह है कि इनमें गलत या असामाजिक कार्यों से परिहार की प्रवृति होती है। इसके विपरीत असामान्य व्यक्तियों को चूँकि वास्तविक परिस्थिति एवं सामाजिक मानकों से कोई मतलब नहीं होता है अतः वे एक के बाद एक अनैतिक असामाजिक एवं घृणित कार्यों को बिना किसी पश्चाताप या दोष-भाव का अनुभव किए करते जाते हैं।

इस तरह यह स्पष्ट हुआ कि सामान्य तथा असामान्य व्यवहार के बीच कई बातों को लेकर स्पष्ट भिन्नता पायी जाती है। उपर्युक्त विवरण से यह भी स्पष्ट होता है कि सामान्य व्यवहार तथा असामान्य व्यवहार के बीच मात्रात्मक **(Quantitative)** तथा गुणात्मक **(Qualitative)** दोनों ही अंतर पाया जाता है। सच्चाई यह है कि जब असामान्यता का स्वरूप कम गंभीर होता है तो असामान्यता-सामान्यता से केवल मात्रा **(Degree of Quantity)** में भिन्न होता है लेकिन जब असामान्यता गंभीर होती है तो इन दोनों में मात्रा के साथ ही साथ प्रकार में भी भिन्नता होती है। मानव व्यवहार के कुछ ऐसे पहलू जैसे-सूझपूर्ण व्यवहार, संतुलित सामाजिक समायोजन, सांवेगिक परिपक्वता एवं नियंत्रण, वास्ताविकता का ज्ञान, विचित्र एवं उटपटांग व्यवहार का न होना, अपनी देखभाल करने की अयोग्यता आदि को लेकर सामान्य एवं असामान्य व्यवहार में गुणात्मक अन्तर पाया जाता है हालाँकि इन सभी व्यवहारों में मात्रात्मक अन्तर **Quantitative difference)** भी है क्योंकि कभी-कभी परिस्थितिवश एक सामान्य व्यक्ति भी इन सभी व्यवहारों को कर बैठता है। इन दोनों व्यवहारों के बीच मात्रात्मक एवं गुणात्मक अन्तर को एक उदारहण द्वारा समझा जा सकता है। मनोग्रस्ति बाध्यता **(Obsession-Compulsion)** से प्रभावित एकं व्यक्ति दिन भर में पचासों बार बाध्यता व्यवहार का प्रदर्शन करता है जबकि सामान्य व्यक्ति ऐसा व्यवहार एक वांछित सीमा तक ही करता है। यह अंतर मात्रात्मक अन्तर का उदाहरण है। जबकि मनोविदालिता तथा सामान्य व्यक्ति में प्रकार (गुणात्मक) का अन्तर होता है।